ISSN : 0975-3664 UGC Care Listed RNI : U.P.BIL/2012/43696

Year : 2025 Month : January-March Special Volume

शोध धारा
SHODH DHARA

A Peer Reviewed Research Journal of Humanities & Social Science
A Reviewed & International Indexed Journal

विशेषांक

ग्रामीण पर्यटन : विकास, रोजगार एवं सम्भावनाएं

शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई-जालौन (उ.प्र.) द्वारा प्रकाशित

Published by Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan
Orai (Jalaun) U.P.

16. भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग की भूमिका : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ	सुश्री सीमा कुमारी	80–84
17. ग्रामीण पर्यटन धर्म एवं पुराण कथाएँ	डॉ. कविता गौतम	85–88
18. भारत के विकास में पर्यटन की भूमिका का एक अध्ययन	मुकेश कुमार गजेंद्र नाथ	89–96
19. वित्तीय संसाधन प्रौद्योगिकी से ग्रामीण पर्यटन की वृद्धि की संभावना और चुनौतियाँ	प्रो. सुधांशु पांडिया शिवांशी सिंह	97–101
20. चित्रकूट मे पर्यटन : संभावनायें एवं समस्यायें	डॉ. अतुल कुमार कुशवाहा डॉ. सिद्धान्त चतुर्वेदी	102–106
21. रोजगार सृजन और आर्थिक विकास में ग्रामीण पर्यटन की भूमिका : झांसी जिले के गड़मउ गाँव का एक अध्ययन	अमीषा माहुने डॉ. शंभू नाथ सिंह	107–113
22. यात्रा और पर्यटन में मधुमक्खी पालन का महत्व	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह डॉ. अतुल कुमार कुशवाहा	114–116
23. बुंदेलखंड के पर्यटक स्थल : एक विश्लेषण	जय प्रकाश सिंह	117–120
24. भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास की संभावनाओं का एक अध्ययन	गजेन्द्र सिंह 'मधुसूदन' डॉ. हेमन्त कुमार बघेल	121–127
25. बुंदेलखंड क्षेत्र में पर्यटन संबंधी समस्याएं : एक विश्लेषण	डॉ. विनय कुमार पटेल	128–132
26. ग्रामीण पर्यटन एवं सतत विकास की संभावना	डॉ. पंकज सिंह डॉ ब्रजेश श्रीवास्तव	133–136
27. ग्रामीण पर्यटन एवं जनजातीय समाज	डॉ. हेमलता सांगुड़ी	137–140
28. भारत में सतत पर्यटन : एक अध्ययन	डॉ. वंश गोपाल	141–145
29. अरण्य तीर्थ चित्रकूट का इतिहास	डॉ. संग्राम सिंह	146–148
30. ग्रामीण पर्यटन, अध्यात्म, स्वास्थ्य और आयुर्वेद	डॉ. राकेश कुमार शर्मा	149–151
31. ग्रामीण पर्यटन से हस्तशिल्प और लोक कलाओं का पुनरुद्धार	डॉ. मयंक जिंदल रजत सहाय दुबे	152–154
32. बुंदेलखंड क्षेत्र का प्रमुख पर्यटक स्थल चित्रकूट	डॉ. प्रमिला मिश्रा	155–158
33. भारत का पर्यटन उद्योग : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ	मुकेश कुमार पवन कुमार सिंह	159–163
साहित्यिक पर्यटन और हिंदी का यात्रा साहित्य	डॉ. गौरव पाण्डेय	164–167
भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास की सम्भावनाएं एवं चुनौतियां : एक समाजशास्त्रीय विवेचन	डॉ. अमित मालवीय डॉ. जयप्रकाश यादव	168–173
विकसित भारत/2047 व ग्रामीण पर्यटन : सततता, चुनौतियां तथा संभावनाएं (वाराणसी परिक्षेत्र के चिरईगांव तहसील के सराय मोहना गाँव के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ. स्वर्णिम घोष डॉ. गगन कुमार श्रीमती प्रियंका भारती	174–179
ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा एवं सम्भावनाएं : चंदौली जनपद के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. प्रियंका पटेल	180–184

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P. BIL/2012/43696
SHODH-DHARA; Jan.-March. 2025, P. 137-140

ग्रामीण पर्यटन एवं जनजातीय समाज

डॉ. हेमलता सांगुड़ी
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
डी.बी.एस. कॉलेज, कानपुर, (उ.प्र.)

सारांश–जनजातीय पर्यटन जनजातीय समुदायों के विकास के लिए एक आशाजनक मार्ग प्रस्तुत करती है, जो आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभों का बहुआयामी दायरा प्रदान करती है। आर्थिक रूप से जनजातीय पर्यटन, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक प्रदर्शनों और गाइडेड टूर के माध्यम से राजस्व उत्पन्न कर मूल निवासियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। ये गतिविधियाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आय प्रदान करती हैं, जो गरीबी कम करने, रोजगार के अवसर उत्पन्न करने और जीवन स्तर सुधारने में मदद करता है।यह अनुसंधान सामुदायिक और व्यापक समाज दोनों के लाभ के लिए जनजातीय पर्यटन को अनुकूलित करने के लिए समग्र रणनीतियों का सुझाव भी देता है। निष्कर्षतः, जनजातीय पयर्टन जनजातीय समुदायों के विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है, जो आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक लाभ प्रदान करता है। अगर चुनौतियों का समाधान किया जाए और ऐसी रणनीतियों को लागू किया जाए जो सतत और समावेशी पर्यटन विकास को बढ़ावा देती है, तो यह पर्यटकों और जनजातीय लोगों के बीच एक परस्पर लाभकारी संबंध को बढ़ावा दे सकता है।

Figure : 00 **References : 08** **Table : 00**
मुख्य शब्द– जनजातीय पर्यटन, सांस्कृतिक संरक्षण, सामाजिक एकीकरण

ग्रामीण पर्यटन वह पर्यटन है, जो ग्रामीण क्षेत्र से सम्बद्ध होता है। वैश्विक स्तर पर ग्रामीण पर्यटन की शुरुआत 19वीं सदी की शुरुआत से हुई, जब शहरों में औद्योगीकरण के तेजी से विस्तार के परिणामस्वरूप ग्रामीण इलाकों ने पर्यटकों को आकृष्ट करना आरम्भ किया। भारत की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक इसकी विविधता के बीच एकता है। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी जनजातीय आबादी भारत में पाई जाती है। 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार भारत की 8.9 प्रतिशत आबादी आदिवासी के रूप में वर्गीकृत है। भारत में 730 से ज्यादा अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जिनमें से हरेक की अपनी संस्कृति, रीति–रिवाज, भाषा और जीवन शैली है। भारत की संस्कृति और विविधता के समृद्ध ताने–बारे की झलक इसके ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में दिखाई देती है, जहाँ सदियों पुरानी परम्परायें आधुनिकता के वादों के साथ सह–अस्तित्व में है। ग्रामीण पर्यटन भारत के पर्यटन उद्योग का एक उभरता हुआ पहलू है, जो यात्रियों को शहरी जीवन के कोलाहल से दूर, ग्रामीण इलाकों के बीच एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है। आदिवासी क्षेत्रों में ग्रामीण पर्यटन मात्र अवकाश का आनन्द ही नहीं है, बल्कि यह भारत के स्वदेशी समुदायों में लोकाचारों, तीज–त्योहारों, संस्कृति को समझने का एक प्रवेश द्वार भी है। यह बाहरी लोगों के लिए एक ऐसी दुनिया की झलक पाने का अवसर भी है, जहाँ लोकगीत नृत्य, संगीत और शिल्प कौशल अतीत के अवशेष मात्र ही नहीं है, बल्कि रोजमर्रा की जिन्दगी का अभिन्न अंग भी है।

जनजातीय पर्यटन को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा जा सकता है, जो जनजातीय समुदायों में आर्थिक सशक्तिकरण, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा दे सकता है, इससे दूरस्थ और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में पर्यटन को समृद्ध कर स्थानीय अर्थव्यस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. भारत में जनजातीय समुदायों पर ग्रामीण पर्यटन के सामाजिक आर्थिक प्रभावों का अध्ययन।
2. जनजातीय क्षेत्र में पर्यटन के सांस्कृतिक निहितार्थों को जानना।
3. जनजातीय क्षेत्र में पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन।
4. ग्रामीण पर्यटन में भाग लेने वाले जनजातीय समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना।

शोध प्रविधि–यह मुख्य रूप से द्वितीय तथ्यों पर आधारित एक वर्णनात्मक प्रपत्र है। आदिवासी पर्यटन और इसके प्रभावों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए पत्रिकाओं, पुस्तकों और विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों से तथ्य एकत्रित किये गये हैं। पर्यटन मंत्रालय व भारत सरकार के जनसंख्यात्मक आँकड़ों से भी तथ्यों का संकलन किया गया है। जनजातीय पर्यटन के तहत पर्यटक जनजातियों को समझने के लिए उनके गाँव और क्षेत्रों का दौरा करते हैं। भारत के अनेक जनजातियों की अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है जैसे कि उड़ीसा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान में अनेकों जनजातियाँ हैं, जो अपनी परम्परागत जीवन शैली को बनाये हुए हैं। जनजातीय पर्यटन उनके विकास और पहचान को बढ़ावा देने के लिए एक अच्छा माध्यम बन सकता है बशर्ते इस पर्यटन से इन जनजातियों को लाभ हो, उनका विकास हो, ये न हो कि इस पर्यटन की आड़ में उनका किसी प्रकार से शोषण हो। इसलिए यह जरूरी है कि पर्यटन का मॉडल उनके समुदाय और संस्कृति के अनुकूल हो।

आर्थिक प्रभाव–जनजातीय पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव स्वदेशी समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। कई जनजातीय क्षेत्रों में पारम्परिक जीविका जैसे कि कृषि, शिकार और संग्रहण प्रायः उन लोगों की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ होते हैं किन्तु पर्यटन पर आधारित अर्थव्यवस्था की शुरुआत से ये समुदाय आय के स्रोतों को विविध बना सकते हैं। जनजातीय क्षेत्रों से जुड़े सांस्कृतिक स्थलों के प्रवेश शुल्क, सांस्कृतिक प्रदर्शनी आर पारम्परिक शिल्प और कलाकृतियों की बिक्री जैसे माध्यमों से पर्यटन से राजस्व पैदा हो सकता है। इन गतिविधियों से समुदाय के सदस्यों को प्रत्यक्ष आय मिलती है और स्थानीय व्यवसायों जैसे खाद्य विक्रेताओं, परिवहन सेवाओं और आवास प्रदावासों के माध्यम से अप्रत्यक्ष लाभ भी मिलता है।

रोजगार सृजन–जनजातीय पर्यटन रोजगार सृजन के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ प्रदान करता है। यह पर्यटन से सीधे जुड़े कार्यों जैसे गाइड, आतिथ्य कर्मचारी, परिवहन, खाद्य उत्पादन और खुदरा जैसे सहायक उद्योगों में भी नौकरियों के अवसर प्रदान करता है। इसके लिए स्थानीय समुदाय को प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण करना पहली आवश्यकता है ताकि सामुदायिक सदस्य पर्यटन उद्योग में प्रभावी ढंग से भाग ले सकें और लाभ उठा सकें।

सांस्कृतिक संरक्षण– जनजातीय पर्यटन सांस्कृतिक संरक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वदेशी संस्कृतियाँ परम्पराओं, अनुष्ठानों, भाषाओं और कला रूपों में समृद्ध है, पर्यटन इन अनूठी सांस्कृतिक धरोंहर को वैश्विक दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने का एक मंच प्रदान करता है, जिससे उनके संरक्षण को बढ़ावा मिलता है। उदाहरणार्थ – नागालैण्ड में हॉर्नबिल फेस्टवल हर साल हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह उत्सव नागा जनजातियों की विविध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है, जिसमें पारम्परिक संगीत, नृत्य, खेल और शिल्प शामिल है। यह उत्सव न केवल समुदाय के लिए महत्वपूर्ण राजस्व उत्पन्न करता है, बल्कि युवा पीढ़ी के बीच सांस्कृतिक गर्व और निरन्तरता को भी सुदृढ़ करता है।

नैतिक पर्यटन : सांस्कृतिक स्थिरता का मार्ग– नैतिक पर्यटन आदिवासी समाजों के सांस्कृतिक और प्राकृतिक वातावरण के साथ जुड़ने और उसे संरक्षित करने के लिए एक सम्मानजनक और स्थिर दृष्टिकोण प्रदान करता है। पर्यटन का यह रूप जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक परम्पराओं और पारिस्थितिकीय वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशील बातचीत को प्रोत्साहित करता है। नैतिक पर्यटन के

एक मॉडल में पर्यटकों को कार्यशालाओं और गाँव के दौरे जैसे सांस्कृतिक अनुभवों में भाग लेना शामिल है, जो जनजाति की जीवनशैली और रीति–रिवाजों का सम्मान करते हुए आयोजित किये जाते हैं। नैतिक पर्यटन को वास्तव में प्रभावी बनाने के लिए इसे जनजातीय समुदायों की पूर्ण भागीदारी और सहमति से लागू किया जाना चाहिए। इस तरह की पहल न केवल पर्यटकों के अनुभव को बढ़ाती है बल्कि आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिरता में भी योगदान देती है।

जनजातीय पर्यटन से जुड़ी चुनौतियाँ :

1. **आर्थिक विकास और सांस्कृतिक अखण्डता को संतुलित करना**–यद्यपि पर्यटन ने आदिवासी क्षेत्रों में आर्थिक विकास के अवसर प्रदान किये हैं, रोजगार पैदा किये हैं और पारम्परिक शिल्प को बढ़ावा दिया है, लेकिन फिर भी पर्यटकों की अपेक्षाओं के अनुरूप होने का दबाव अक्सर परम्पराओं को विकृत करता है। अतः एक ऐसे समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमे आय उत्पन्न करने के साथ–साथ सांस्कृतिक अखण्डता को संरक्षित रखा जा सके।
2. **पर्यावरण संबंधी चिन्ताएँ और स्थिरता**–अनियंत्रित पर्यटन आदिवासी क्षेत्रों में नाजुक पारिस्थितिकी तन्त्र को खतरे में डालता है। प्रदूषण, वनों की कटाई और संसाधनों की कमी में वृद्धि तत्काल कार्रवाई की माँग करती है। पर्यटकों के लिए पर्यावरण शिक्षा और समुदाय–आधारित संरक्षण कार्यक्रमों को एकीकृत करके इन चुनौतियों को कम किया जा सकता है।
3. **पारम्परिक जीवन शैली में व्यवधान**–जनजातीय पर्यटन का उद्देश्य पर्यटकों को जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक धरोहर, परम्पराओं और जीवन शैली का अनुभव प्रदान करना है, हालाँकि इस प्रकार के पर्यटन का जनजातीय समुदायों की जीवन शैली पर कई प्रकार से प्रभाव पड़ता है, जनजातीय लोग पर्यटकों के साथ संवाद करते हुए अपनी पारम्परिक भाषा, पहनावा और रीति–रिवाजों को धीरे–धीरे खोने लगते हैं। पर्यटकों की बढ़ती संख्या से जनजातीय क्षेत्रों के पर्यावरण पर दबाव पड़ता है। पर्यटन से अर्जित धन अक्सर बाहरी संगठनों या बिचौलियों के पास चला जाता है, जिससे जनजातीय समुदायों को अपेक्षित लाभ नहीं मिलता।
4. **सांस्कृतिक वस्तुकरण**–जनजातीय पर्यटन के एक महत्वपूर्ण जोखिम में सांस्कृतिक वस्तुकरण शामिल है। जब सांस्कृतिक तत्वों को पर्यटकों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए वस्तु के रूप में प्रचारित और बेचा जाता है, तो वे अपनी प्रामाणिकता और महत्व खो सकते हैं। परम्पराओं को बदला जा सकता है, जिससे संस्कृति की गहन पहचान कमजोर हो जाती है। यह समुदाय की सांस्कृतिक अखण्डता और पहचान को कमजोर कर सकता है।

समाधान :

- सामुदायिक सदस्यों को पर्यटन योजना और प्रबन्धन में शामिल किया जाये ताकि पर्यटन विकास उनकी सांस्कृतिक मान्यताओं और आकांक्षाओं के साथ मेल खाये।
- पर्यटकों को स्वदेशी संस्कृतियों का सम्मान करने के महत्व के बारे में शिक्षित करना और प्रामाणिक सांस्कृतिक अनुभवों को बढ़ावा दिया जाये।
- पारम्परिक जीवन–शैलियों और प्राकृतिक पर्यावरण का सम्मान करते हुए पर्यटन विकास को लागू किया जाये।
- पर्यटकों की संख्या पर सीमा तय करना और पर्यटन संबंधी गतिविधियों को विनियमित करना।
- पर्यावरण प्रदूषण का ध्यान रखते हुए जनजातीय पर्यटन को बढ़ावा दिया जाये।

रणनीतियाँ :

- जनजातीय पर्यटन के लाभों को अधिक स्थायी बनाने के लिए कई रणनीतियाँ लागू की जा सकती हैं।
- यह सुनिश्चित करना कि जनजातीय समुदाय पर्यटन योजना और प्रबंधन में सक्रिय रूप से शामिल हो ताकि आशातीत परिणाम प्राप्त हो सके।

- सामुदायिक सदस्यों को पर्यटन से संबंधित गतिविधियों में कौशल बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण अ संसाधन उपलब्ध कराये जायें।
- आतिथ्य, मार्गदर्शन, विपणन और व्यवसाय प्रबंधन में प्रशिक्षण पर्यटन उद्योग में प्रभावी भागीदारी क सुनिश्चित कर सकता है।
- प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के लिए पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं को अपनाय जाये।
- इसमें इको–फ्रेंडली आवास, कचरा प्रबंधन और संरक्षण कार्यक्रम को शामिल करना एक सार्थक कदम होगा।
- पर्यावरण अनुकूल पर्यटन केवल संसाधनों को संरक्षित ही नहीं करता है, बल्कि पर्यावरण के प्रति जागरुक पर्यटकों को भी आकर्षित करता है।

भारत सरकार की पहल :

स्वदेश दर्शन योजना–भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने 2015 में स्वदेश दर्शन योजना शुरू की, जिसका उद्देश्य सतत् और सामाजिक रूप से जिम्मेदार पर्यटन केन्द्र बनाना है। योजना के तहत 'आत्मनिर्भर भारत' को बढ़ावा देने के लिए भारत के समृद्ध पर्यटन क्षमता का उपयोग किया जा रहा है। नागालैण्ड, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना जैसे राज्यों में जनजातीय सर्किट परियोजनाओं के लिए करोड़ों की धनराशि स्वीकृत की गई है। उत्तर प्रदेश सरकार ने तराई क्षेत्र के थारू जनजाति के गाँवों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की योजना बनाई है। इसके तहत पर्यटकों को थारू जनजाति के आवास में रहने और उनकी जीवनशैली का अनुभव करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

निष्कर्ष–जनजातीय पर्यटन जनजातीय समुदायों के विकास के लिए एक शक्तिशाली प्रयास हो सकता है। यह पारम्परिक प्रयासों, अनुष्ठानों और हस्तशिल्प को संरक्षित करते हुए समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है। जनजातीय पर्यटन पर्यटकों और समुदाय के सदस्यों क बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देकर सामाजिक एकीकरण को प्रोत्साहित करता है। हालांकि पर्यटन से जुड़ी चुनौतियों एवं व्यवधान को रणनीतिक योजना और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से प्रबंधित करने की आवश्यकता है। यदि सतत और समावेशी पर्यटन विकास को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों को लागू किया जाये, तो जनजातीय पर्यटन न केवल जनजातीय समाज व पर्यटकों के लिए बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए एक सकारात्मक कदम साबित हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. Bhatia, A. (2016), Income Diversification through Tourism, Tourism Economics, 21(3) 22(1), 45-59.
2. हेमन्त मेनन, कुरुक्षेत्र, जून–2024, पृ0सं0 30
3. Mr. Sandesh Bandhu & Others, Quest Journals, Journals of Research in Humanistics and Scial Sciences, Volume 12, Issue 7 (2024).
4. पर्यटन मंत्रालय (2021) भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राट्रीय रणनीति और रोड मैप, आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक पहल।
5. जनजातीय कार्य मंत्रालय (2021–22) वार्षिक रिपोर्ट।
6. https://swadeshdarshan.gov.in/index.php? Theme
7. Patel, S. The Hornbill Festival : A Case of Cultural Tourism. Journal of Calcutta Heritage (12) (3), 180–195.
8. कुमार, एस0 एवं शर्मा आर0 (2019), ग्रामीण पर्यटन, स्थानीय रोजगार का उत्प्रेरक : इण्डियन जर्नल आफ टूरिज्म रिसर्च।

■